Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III | ISSUE- XII | Dec. | 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

शिक्षा में कला

Sudhir Sharma,
Assistant Professor,
Department Of Fine Arts,
DAV College of Education,Abohar

कला प्राकृतिक लिपि है'' प्राकृति में बहुत सुंदरता है और उस सुंदरता के नाजरे को चित्रित करना ही कला है। वर्तमान समय में कला मनुष्य के मनोभाव तथा भावनाओं से सम्बंधित है। सुसाने लैगरज के अनुसार ''मनुष्य की भावनाओं को आकारों में बदलना ही कला है।'' कला आनंद, खुशी तथा उत्साह का केवल मात्र स्त्रोत ही नहीं बल्कि ये ज्ञान, रूचि, मानसिक योग्यता, बौद्धिक योग्यता आदि जैसे गुणों के विकास में बहुत सहायक है।

पहले ये माना जाता था कि शिक्षा का उद्देश्य के मात्र बालक का बौद्धिक विकास करना है। केवल विषय वस्तु को ही मुख्य माना जाता था। परंतु वर्तमान समय की ये अवधारणा बदल चुकी है। ये बात सिद्ध हो चुकी है कि सहसम्बन्ध द्वारा दिया गया ज्ञान ज्यादा आसानी से प्राप्त किया जा सकता है तथा वे ज्ञान बालक के मानसिक तथा बौद्धिक विकास के साथ–साथ शारीरिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास के पक्ष की ओर भी विशेष ध्यान देता है। इसी अवधारणा से यह माना गया कि कला ही ऐसा माध्यम है जिसको पाठ्यक्रम में जोड़कर विभिन्न–विभिन्न विषयों में बालकों की रूचि को विषय के प्रति बढ़ाया जा सकता है।

सहसम्बंध का उद्देश्य Pupose of Correlation

1. इसका मुख्य उद्देश्य बालक को दिया जाने वाले ज्ञान को रोचक बनाना है तथा विषय वस्तु को स्पष्ट करना है।
2. ये एक समय की बचत की प्रक्रिया है जो कि मुख्य रूप से दो विषयों को एक साथ जोड़कर पढ़ने में तथा समय की बचत करने में विश्वास रखती है।
3. ये प्रक्रिया पूर्वाज्ञान से सम्बंधित तथा नये ज्ञान प्राप्त करने में सम्बंध स्थापित करती है।
4. सह सम्बंध की प्रक्रिया बालकों में प्रायोगिक ज्ञान तथा व्यक्तिगत निपुणताओं का विकास करती है।
5. यह दूसरे विषयों को आसानी से समझने योग्य बताती है।
6. ये विषयों की रोचकता तथा सरलता में सहायक है।
7. ये बालकों के सर्वांगीण विकास पक्ष की ओर अग्रसर रहती है।
8. ये ज्ञान को व्यवहारिक रूप में बदलने में सहायक होता है।

ललित कला तथा दूसरे विषयों में सहसम्बंध Relationship between fine art and Other Subjects

शिक्षा ग्रहण करने के आरंभिक स्तर पर अगर बालकों को पढ़ाई जाने वाली सामग्री में चित्र, तस्वीरें तथा आकृतियाँ सम्मिलित कर दी जाएँ तो वे सामग्री रोचक हो जाती है तथा सरलता से समझने योग्य बन जाती हैं। कला दूसरे विषयों के पढ़ने में बहुत सहायक होती है। तथा कला का दूसरे विषयों से गहरा सम्बंध होता है। कला का दूसरे विषयों से सम्बंध निम्नलिखित द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है –

1.कला तथा गणित Art & Mathmatics

गणित विषय बालकों को सबसे ज्यादा मुशकिल (कठिन) लगने वाला विषय होता है। यह विषय अगर कला के माध्यम द्वारा पढ़ाया जाए तो ये एक आसान रूप ले लेता है। सबसे पहले हम बालकों को गिणती सिखाने की बात करें तो बच्चों में विषय प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिए हम रंगदार फूलों, फलो, मोतियों तथा अन्य प्रभावित करने वाली चीजों का प्रयोग कर सकते है जिससे बच्चे उस विषय के प्रति आकर्षित होंगे। इसी तरह जमा करना, घटाना तथा गुणा करना आदि भी बालकों की पसंदीदा चीजों द्वारा सीखाया जा सकता है। रेखा–गणित

पढ़ाने के लिए अलग–अलग रंगों के कागजों द्वारा वर्गों तथा आयातों को काट लिया जाता है जो पाठ्य को रोचक बनाते हैं। रेखा गणित टैक्नीकल ड्राईंग का विकसित रूप है। सभी प्रकार की रेखाएँ गणित से सम्बंधित होती हैं। चित्रकला का जन्म रेखा चित्र द्वारा हुआ है। नृत्य कला तथा संगीत कला में लय, ताल, सर सभी गणित पर निर्भर होते हैं। इसके अलावा वर्ग, त्रिकोण, चर्तुभुज आदि की चित्रों की जानकारी भी रंगदार कागजों तथा गत्ते पर काट कर दी जा सकती है।

2.कला का इतिहास Art & History

कला इतिहास के साथ अटूट रूप से जुड़ी हुई है। अगर किसी समय का इतिहास शरीर है तो कला उसकी आत्मा है। इतिहास पुरातन कला को अपने में समेटे रखता है तथा आधुनिक कला के लिए दरवाजे खुले रखता है। इतिहास द्वारा ही हम प्राचीन समय सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। कला हमें इतिहास समझने में सरलता प्रदान करती है कला के स्त्रोत सिक्के, मोहरें, कला भवन, इमारते, स्तंभ, चित्रकारी, बर्तन आदि हमें बीते समय की सभ्यता का चित्रित रूप प्रदान करती है। इतिहास पढ़ाने के लिए मॉडल चित्रों तथा नक्शे की आवश्यकता होती है जो कि हमें कला द्वारा मिलते हैं। इतिहासिक स्थानों पर यात्रा करना तथा वहाँ की कला से परिचित करवाकर बालकों को इतिहास सम्बंधी आसानी से जानकारी दी जा सकती है।

3.कला तथा भूगोल Art & Geography

कला का विकास ही भौगोलिक स्थिति से माना जाता है। चित्रकला, संगीतकला, भवनकला आदि भौगोलिक स्थिति के अनुसार ही विकसित होती है। इसी प्रकार भारतीय चित्रकाल में तथा काव्य कला में हरे–भरे पेड़, पहाड़, सागर तथा लहरें प्राकृतिक नजारों का चित्रण मिलता है। यहाँ तक की भवन निर्माण भी भौगोलिक स्थिति पर ही निर्भर करता है। पहाड़ों में मकान पत्थरों तथा मैदानों में ईंटो के बने होते हैं। उपन्यासकारों, कहानीकारों तथा कवियों के मनों पर भी वातावरण का प्रभाव जरूर देखने को मिलता है। किसी भी देश, स्थान, शहर, समुद्र, पहाड़ों, सड़कों आदि की जानकारी देने के लिए नक्शों का इस्तेमाल किया जाता है तथा सम्बंधित विषय सम्बंधी जानकारी आसानी से दी जा सकती है।

4.कला तथा विज्ञान Art & Science

कला कल्पना द्वारा व्यक्त होती है तथा विज्ञान सत्य द्वारा। ये दोनों विषय दूर होते हुए भी बहुत पास हैं। विज्ञान विषय को रोचक बनाने के लिए चित्र तथा मॉडलों का प्रयोग बहुत जरूरी है। चित्र तथा मॉडल बनाने के लिए कला की बहुत आवश्यकता है। टैक्नॉलोजी का अविष्कार भी कला द्वारा होता है। संगीत कला के लिए संगीत साधनों की आवश्यकता होती है जो कि विज्ञान द्वारा बनाए गए। चित्रकारी के लिए विभिन्न प्रकार के रंग भी विज्ञान की देन है। Physics तथा Biology विषय में चित्रकारी की विशेष आवश्यकता पड़ती है। जिसमें कला का विषय बहुत सहायक सिद्ध होता है। विज्ञान के विभिन्न चमत्कार कला की ही देन है।

5.कला तथा भाषाएँ Art & Languages

कला का भाषा के साथ गहरा सम्बंध होता है। बालक अपनी आरंभिक अवस्था से मातृभाषा सीखता है। उसके साथ–साथ बाकी भाषाओं का ज्ञान बालक को कला के द्वारा आसानी से दिया जा सकता है जैसे कि अंग्रेजी वर्णनमाला में 'D' शब्द सिखाते समय अगर Dog को फोटो के साथ दिखाया जाए तो बालक उसे आसानी से समझ लेगा। अगर D को अलग तथा Dog को अलग तौर पर समझाया जाए तो बालक को समझने में कठिनाई उत्पन्न हो सकती है।

कला का मुख्य उद्देश्य बालक को आत्म प्रगटाव के विभिन्न मौके प्रदान करना होता है। इसी तरह भाषा द्वारा बालक अपने विचारों को लिखित या मौखिक रूप से प्रकट करता है। एक सुंदर प्राकृतिक नजारे को प्रकट करने के लिए भाषा द्वारा कला के माध्यम से दृश्य रूप प्रदान किया जाए तो नतीजे सफल प्राप्त किए जा सकते हैं साहित्य का माध्यम भाषा है लेख या कहानी पढाते समय कला का सहारा लेना पड़ता है। इस तरह से कला तथा भाषा गहरे तौर पर जुड़े हैं। ये दोनों मिलकर विषय वस्तु को आसान तथा रोचक बनाते हैं।

6.कला तथा अर्थशास्त्र Art & Economics

कला का अर्थशास्त्र के साथ भी गहरा सम्बंध है। अगर कला को एक मुख्य व्यवसाय के तौर पर अपनाया जाए तो आर्थिक तौर पर बहुत लाभ कमाया जा सकता है। मनुष्य जीवन की सारी आर्थिक गतिविधियॉ अर्थशास्त्र के साथ जुड़ी होती हैं। कला मनुष्य को भावी जीवन के लिए तैयार करती है। पैसा कमाना भी कला माना जाता है। आर्थिक पक्ष से सफल व्यक्ति भविष्य के लिए भी अपनी कला का सादुपयोग करके अपने आप को सफल बनाने का यत्न करता है तथा देश के आदर्श नागरिक के रूप में आर्थिक विकास के पक्ष को ऊपर उठाता है।

7.कला तथा शिल्पकला Art & Craft

कला को शिल्प से अलग समझना गलत है क्योंकि दोनों में गहरा सम्बंध होता है। किसी सामग्री को निश्चित रूप तथा आकार देकर उससे कोई लाभकारी तथा उपयोगी वस्तु बनाना ही शिल्पकला है। शिल्पकला को 'हस्तकला' भी कहा जाता है। बालकों को विभिन्न प्रकार की सामग्री जैसे प्लास्टर ऑफ पेरिस, चीकनी मिट्टी, टूटी चुड़ियाँ तथा अन्य सामान, लकड़ी के टुकड़े, गत्ते, पत्थर शीशे, आदि द्वारा कुछ न कुछ सजावटी वस्तुओं का निर्माण करना सीखया जाता है तथा शिल्पकला के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की जानकारी भी बालक को मिलती है जैसे प्लास्टर ऑफ पेरिस क्या है, कहॉ से मिलती है, क्या उपयोग होता है, कितने की आती है आदि सभी प्रकार की जानकारी प्राप्त होती हैं। कला तथा शिल्पकला दोनों का उद्देश्य बालक की आंतरिक कला तथा भावों को बाहर निकालता है। अतः हम कह सकते हैं दोनों में अटूट सम्बंध है।

8.कला तथा कृषि Art & Agriculture

कला तथा कृषि दोनो गहरे रूप से सम्बंधित है। कृषि सम्बंधी उपयोग में आने वाली सामग्री औजार, अलग–अलग प्रकार की फसलें, बीज आदि की जानकारी हमें कृषि विज्ञान से मिलती है। फसलों की देखभाल, अधिक पैदावार, कीटनाशकों से बचाव आदि का सही प्रयोग भी कला माना जाता है। विभिन्न चित्रों तथा तस्वीरों द्वारा कृषि सम्बंधी विभिन्न जानकारियाँ प्रदान की जा सकती हैं जो कि विषय को आसान तथा सरल रोचक बनाती है।

9.कला तथा अन्य विषय Art & Other Subjects

उपरोक्त विषयो के अलावा कला का समाजशास्त्र राजनीतिक शास्त्र, नैतिक शिक्षा, फैशन, तकनालजी आदि जैसे विषयों में भी विशेष सम्बंध है। कला विभिन्न विषयों को सरल तथा रोचक के साथ–साथ समय की बचत तथा सफल नतीजे प्रदान करने में सहायक है।

References

- Burnaford , G., Aprill, A., & Weiss, C. (2001). Renaissance in the classroom: Arts integration and meaningful learning. Mahwah, NJ: Lawrence Erlbaum.
- Cooley & Associates (2007). Arts and culture in medicine and health: A survey research paper. Arts Research Monitor, 6(1). Retrieved from http://www.artsresearchmonitor.com/article_details.php?artUID=50366
- Cornett, C., & Smithrim, K. (2000). The arts as meaning makers: Integrating literature and the arts throughout the curriculum. Toronto, ON: Prentice Hall.
- http://www.etfo.ca/Resources/ForTeachers/Documents/Arts%20Education%20for%20the%20Development%20of%20the%20Whole%20Child.pdf